'अप्प दीपो भव'

वॉयस ऑफ बुद्धा

Postal Reg. No.-DL(ND)-11/6144/2013-15
WPP Licence No.- U(C)-101/2013-15
R.N.I. No. 68180/98

प्रकाशन तिथि- 30 जून, 2014

मूल्य : पाँच रूपये

प्रेषक : डॉ0 उदित राज (राम राज) चेयरमैन - जस्टिस पब्लिकेशंस, टी-22, अतुल ग्रोव रोड, क्लॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001, फोन : 23354841-42

Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com

● वर्ष : 17 ● अंक 15 ● पाक्षिक ● द्विभाषी ● 16 से 30 जून, 2014

पटना में हुआ माननीय उदित राज का भव्य स्वागत समारोह

मदन राम, प्रदेशाध्यक्ष

उत्तर-पश्चिम दिल्ली लोक सभा क्षेत्र से निर्वाचित होकर संसद पहुंचने पर माननीय डॉ0 उदित राज का अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ, बिहार प्रदेश इकाई द्वारा दिनांक 22.6.2014 (रविवार) को 12 बजे से 'भारतीय मंडपम्'' हाल विद्यापति मार्ग, पटना, बिहार में ''नागरिक अभिनन्दन-सह स्वागत समारोह' आयोजित किया गया। इसमें बिहार प्रदेश के विभिन्न जिलों से विभिन्न राजनीतिक व सामाजिक संगठनों के सदस्यों के साथ-साथ पदाधिकारी, प्रबुद्ध समाजसेवी एवं नागरिकगण उपस्थित हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बिहार प्रदेश अध्यक्ष ने परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 उदित राज का सांसद बनने पर बिहार परसिंघ के सभी सदस्यों की तरफ से सम्मानित किया। स्वागत और अभिनंदन का सिलसिला करीब एक घंटे तक चलता रहा। सभी सदस्यों ने अपने प्रिय सांसद का फूल-माला से लाद कर तहे दिल से स्वागत किया। कुछ क्षण तक हमारे सांसद अपने स्वागत से आत्मविभोर हो गए। अखिल भारतीय राजभर महासभा, अखिल भारतीय चन्द्रवंशी महासभा, अखिल भारतीय स्वर्णकार महासभा, संतगणों की सेवा संस्थान बिहार, अनुसूचित जाति/जन जाति कर्मचारी संघ, बिहार आदि बहुत सारे सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों के प्रदेश अध्यक्ष तथा सचिव तथा अन्य पदाधिकारियों ने अपने प्रिय सांसद का स्वागत किया। परिसंघ के नवादा जिला अध्यक्ष श्री शिवधर पासवान, श्री रघुनंनदन चौधरी, जिलाध्यक्ष नवादा, प्रो. डी.एन. चौधरी - जिला अध्यक्ष भोजपुर, श्री आनन्द कुमार, सरपंच जिला अध्यक्ष रोहतास, श्री डी. नारायण, जिला अध्यक्ष मोतिहारी, श्री अमिताभ बच्चन, जिलाध्यक्ष, लखी सराय, श्री राजकुमार पासवान, जिलाध्यक्ष खगड़िया। श्री राजकुमार रजक, जिलाध्यक्ष गया, बिहार परिसंघ की बिहार इकाई के सचिव कुमार वीरेन्द्र प्रसाद ने भी सभा को सम्बोधित किया।

अपने ओजस्वी भाषण में माननीय सांसद एवं परसिंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 उदित राज ने बताया कि निजीकरण एवं भूमंडलीयकरण की वजह से जिसके पास धन है, उसी की मीडिया, शासन और तमाम ताकतें हैं। इस स्थिति में यदि दलित आदिवासी का आर्थिक सत्ता में भागीदारी के लिए कैंडर कैंप, तकनीकी सहायकता, कर्ज बाजार नेटवर्क मांग एवं पूर्ति आदि के लिए इन्हें तैयार नहीं किया गया तो ये गुलाम ही रह जाएंगें। परिसंघ को फिर से नई गति देने के लिए इस बार का राष्ट्रीय अधिवेशन 6 जुलाई, 2014 को 'रवीन्द्र भारती आडोटोरियम, हैदराबाद में होने जा रहा है। माननीय सांसद महोदय ने लोगों से अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने की अपील करते हुए हाथ उठवाकर भाग लेना निश्चित भी किया।

अंत में बिहार परिसंघ के महासचिव श्री देवी प्रसाद ने सभी आगन्तुक अतिथियों को धन्यवाद देते हुए उनके प्रति परिसंघ की कृतज्ञता अर्पित की। इन सारे कार्यक्रमों को सुचारू रूप से सम्पन्न कराने में स्वागत समिति के संयोजक एवं प्रांतीय सचिव श्री कुमार धीरेन्द्र प्रसाद का सराहनीय सहयोग रहा। मंच संचालन की जिम्मेदारी डॉ ओम प्रकाश जिला सचिव लखीसराय ने कुशलतापूर्वक निभायी। स्वागत समारोह इस वायदे के साथ समाप्त किया गया कि अब हम सब 6 जुलाई को हैदराबाद में मिलेगें।

...

15 जून को परिसंघ की उत्तर प्रदेश इकाई ने डॉ0 उदित राज को सांसद चुने जाने के बाद लखनऊ आने पर किया भव्य स्वागत

भवननाथ पासवान, प्रदेशाध्यक्ष

अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ की उत्तर प्रदेश इकाई ने परिसंघ के राष्ट्रीय चेयरमैन डॉ0 उदित राज जी को सांसद चुने जाने एवं लखनऊ प्रथम आगमन पर भव्य स्वागत किया । अनुसूचित जाति/जनजाति परिसंघ के प्रदेश अध्यक्ष भवननाथ पासवान ने बताया कि मा0 डॉ0 उदित राज जी को सांसद चुने जाने तथा लखनऊ प्रथम आगमन पर राष्ट्रीय, प्रदेश, मण्डल, जिला पदाधिकारियों में एस0पी0 सिंह, राष्ट्रीय सचिव, डॉ0 अनिल कुमार प्रदेश महासचिव, डॉ0 बलराम, रामसिंह, पंचम लाल, आर0डी0 प्रेमी, शैलेन्द्र कुमार भारतीय, राम सजीवन, जी0डी0 सोनकर, दीपेश कुमार, विजय पासी, संजय राज, विक्की सोनकर, सरदार रंजीत सिंह, राधेश्याम राम, रेलवे मुरली भाई डिबाई वाले सहित बड़ी संख्या में 15 जून, 2014 को समय 10.15 बजे चौधरी चरण सिंह एयरपोर्ट, लखनऊ में भव्य स्वागत किया। मा0 डॉ0 उदित राज जी एयरपोर्ट से गाड़ियों के काफिलों के साथ बाहर जब कानपुर रोड की ओर बढ़े तो स्वागत की अगली कड़ी में विभिन्न विभागों से कर्मचारियों, अधिकारियों ने मुख्य रूप से सोहन लाल रावत, सुभाष चन्द्र, राम बिरज रावत, बिहारी लाल, राजेश कुमार, जय करन, बालक राम गौतम, गोपाल कनौजिया, विकास मोगा, दुर्गा प्रसाद, शिव बालक रावत,

(शेष पृष्ठ 3 पर)

स्वागत समारोह में मंच पर डॉ0 उदित राज के साथ बीच में उ0प्र0 परिसंघ के अध्यक्ष, भवननाथ पासवान एवं दाएं श्री कौशल किशोर, सांसद एवं बाएं श्री दिनेश शर्मा, महापौर व अन्य

सामाजिक क्रांति के लिए टोपी नहीं खोपड़ी बदलनी होगी

एस. एल. सागर

गतांक से आगे ...

द्विजों ने अपनी इस वर्णव्यवस्था को ईश्वरीय ईजाद कहकर प्रचारित किया और उसका उल्लंघन पापजनक और दंडनीय घोषित कर दिया। पाप और दण्ड के डर से कभी किसी उच्छेदन की बात नहीं की। पूरा समाज इसे ईश्वरीय मानता रहा। द्विजों ने फैलाया कि कर्मानुसार पूर्व जन्म के आधार पर वर्ण में जन्म मिलता है। ब्राह्मणवादियों ने वर्ण-व्यवथा को लेकर स्वर्ग नर्क की कल्पना भी कर डाली। यह भय दिखाया गया कि जो वर्णानुसार धर्म का पालन नहीं करेगा उसे नर्क मिलेगा और जो इसका कठोरता से पालन करेगा उसे स्वर्ग मिलेगा। इस वर्ण-व्यवस्था की स्थिति इस प्रकार क्यों की गयी कि अकेला शूद्र कमाता था और तीन द्विज निठल्ले खाते थे।

ब्राह्मण पुरोहित वर्ग था उसने धर्म का ईजाद किया। उसने कहा कि यह दुनिया ईश्वर ने बनाई और इसका ईश्वर की इच्छा के बिना पत्ता तक नहीं हिलता। इतना कहकर द्विजों ने भाग्य और पुनर्जन्म की कल्पना कर उसे समाज पर थोप दिया। कमेरे शूद्र समाज को द्विज पुरोहित ने समझाया कि तुम गरीब ही नीच है। यह सब ईश्वर की व्यवस्था के अनुरुप तुम्हारे कर्मो का ही फल है। इस ईश्वरीय निर्णय के विरुद्ध विद्रोह नर्क में धकेल देगा और यदि गंदे-नीच श्रम के पेशे निष्ठापूर्वक करते रहोगें तो अगले जन्म में ब्राह्मण बन जाओगे या स्वर्ग में चले जाओगे। इस प्रकार पूरा दलित समाज - शूद्र समाज जो भारत का मूलनिवासी था इस बाहरी आर्य पुत्रों की गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा रहा। उसने कभी नहीं सोचा कि जो निठल्ला मुफ्त का खाता है वह नर्क में क्यों नहीं जाता है। ब्राह्मण पुरोहित ने हजारों देवी देवताओं को पैदाकर शूद्रों को बताया कि जो धन तुम्हारे पास इकट्ठा हो जाए उसे देवताओं के नाम पर चढ़ा देने पर तुम्हें पापों से मुक्ति मिल जाएगी और अगले जन्म में इस धन का दुगना मिल जाएगा। ईश्वर तो इतना महान है कि उसके नाम का एक पैसा दान देने पर वह एक लाख देता है। यह कहकर द्विजों ने मेहनत मजदूरी करके जो भी शूद्र दलितों ने कमाया वह भी दान के नाम पर छीन लिया। उसे कमेरे वर्ग ने कभी सोचने का प्रयास नहीं किया कि द्विजों का हर देवता और ईश्वर हथियारों से लेस रहा - विष्णु पर चक्र ब्रह्म पर ब्रह्मफास, शंकर पर त्रिशूल इन तीनों के पुत्र और पत्नियों पर आठ-आठ भुजाओं में आठ-आठ हथियार। काली माता तो खून पीने का खप्पर लिए डोलती है, किन्तु जब 17-17 वर्ष की उम्र के यवन छोड़कर घोड़ा चढ़कर भारत आए और उन देवताओं के मन्दिरों पर हथौड़ा बजाया और इन देवताओं को कूट-कूटकर चूर कर डाला तो इनमें से बाकी भी देवता या देवी अपनी और अपने घर की रक्षा नहीं कर सकता तो ये तुम्हारे पेट में पीर कैसे कर सकते हैं। यह दलित शूद्र वर्ग इतना धर्म भीरू बना रहा कि इसने कभी यह नहीं सोचा कि पेट का दर्द गलत खान-पान से होता है किसी देवी-देवता के नाराज होने से नहीं इन झूठे ठगों द्वारा पैदा किए गए देवी-देवता सब बेकार हैं। अपने पौरुष पर भरोसा करो यही जीवन में सफलता की कुंजी है। हमें अपना विवेक जागृत करना चाहिए। इस दोमुहिया पुरोहित वर्ग ने कहा कि भावी प्रबल है उसने जहन में डाल दिया - भाग्य लेख न मिटे। कोई लाखों चतुराई। उसने आदमी को सोच से कुंठित कर दिया। उसने दुर्घटनाओं से कभी सीख नहीं ली न सुधार का प्रयास किया। उसने धारणा बना ली कि जो कुछ घटा है उसे तो घटना ही था और जो भी घटेगा यह भी पहले से ही निश्चित है। इस पराव्य के सोच ने आदमी को निठल्ला उत्साहहीन, प्रयासहीन और कायर बना दिया उसने कभी तर्क बुद्धि का प्रयोग नहीं किया कि पुरोहित जब भावी की प्रबल बरता है तो शुभमुहूर्त खोजने के नाम पर ठगने का काम क्यों करता है? वह दिन दिखाए ठीक करने के नाम पर ठगने का कम क्यों करता है। वह दिन दिखाए ठीक करने के नाम पर भी भरोसा देकर हम यहां क्यों करता है और क्यों ठगाई करता है। जब भाग्य प्रबल है तो शुभ मुहूर्त ढूढ़ने से क्या लाभ यह झूठी ठगाई क्यों करता है क्यों हवन यज्ञ करता है और ऐंठता है। काठी माला रुद्राक्ष धारण करके, निपुड़ शंख बनाने से क्या लाभ होगा। ब्राह्मण पुरोहित का यह दोहरा चेहरा ठगने का जरिया है। यह बात इन भूखे नंगे दलित शूद्र समाज के दिमाग में क्यों नहीं आई। द्विजों ने मृत्युभोज संस्कार की ईजाद की और उन भोजन भट्ठी ने अपने पेट भरने का साधन भी जुटा लिया। इस प्रकार इस दुष्ट द्विज समाज ने इस कमेरे समाज के लोगों को मूर्ख बनाया। इसने कभी यह भी नहीं सोचा कि यदि बाभनों को खिलाने से मरे हुए पुरखों का पेट भर जाता और वे तृप्त हो जाते तो जो आदमी बाहर परदेश जाता उसके साथ रास्ते के लिए भोजन बांधने की जरुरत नहीं है उसके पेट में भोजन पहुंचाने के लिए कोई भी घर पर भोजन कर लेता। उसने हजारों वर्षों से अच्छा से अच्छा भोजन खिलाकर इन बाभन मुसटण्डों का पेट भरता आया है।

हम सैकड़ों हजारों उदाहरण दे सकते हैं कि अद्विज समाज द्विजों द्वारा बुने गए जाल में इस प्रकार जकड़ा हुआ है कि उसने कभी विवेक का इस्तेमाल ही नहीं किया। उसने अपनी दशा और दिशा बदलने के लिए कभी कोई जिज्ञासा ही उत्पन्न नहीं हुई। वह इतना कायर बना रहा है कि परितर्वन का नाम सुनकर ही उसकी वोटी कांपती रही। वह द्विज समाज के शोषण का बोझ ढोता हुआ द्विजों का खरीदा हुआ वैसा बना रहा। उसने सामाजिक परितर्वन हेतु कभी अपनी खोपड़ी क्यों नहीं बदली। यह सच है कि वह पंथों की टोपियां बदलता रहा किन्तु अपनी खोपड़ी बदलने का प्रयास नहीं किया। आज जो समाज की स्थिति है उसमें बदलाव आवश्यक है, आज सामाजिक परिवर्तन के लिए टोपी नहीं खोपड़ी बदलने की जरुरत है।

जो लोग आज के परिपेक्ष में सामाजिक और सांस्कृतिक क्रांति के हित में आवश्यक मानते हैं। उन्हें चोला नहीं चाल और चरित्र बदलाव के लिए मानसिकता का बदलना आवश्यक है मनुष्य की मानसिकता नैतिकता से बदलती है और नैतिकता की उत्पत्ति विवेक से होती है। इस प्रकार की क्रांति संभव नहीं है।

भारत की सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था में कोई अंतर नहीं है। यहां व्यक्ति के जो सामाजिक कर्तव्य और अधिकार हैं। वही उस व्यक्ति का धर्म है। क्षत्रिय का धर्म लड़ना है, युद्ध करना है। नीत भी यही कहती है, अर्जुन धर्म का पालन कर और युद्ध करना ही तेरा धर्म है। यहां विवेक से काम लेने पर कोई युद्ध कर्म धर्म नहीं हो सकता। यदि सामाजिक क्रांति करना है तो पहले दिमाग को बदलना होगा। आदमी को अपनी सोच बदलना है तो उसे अपना विवेक बदलना होगा।

अंधविश्वास और पाखंड किसी क्रांति में सबसे बड़ी बाधा होती है। अंधविश्वास ही बहुत हद तक सामाजिक शोषण के लिए जिम्मेदार है। आदमी जब यह विश्वास कर लेता है कि मूंछ और पूंछ वाले आदमी हो सकते हैं तब उसे कोई भी अमानवीय कारण मानने में कोई हिचक नहीं होगी। जैसे ब्राह्मण मुंह से पैदा हुए और शूद्र पैरों से इसी लिए ब्राह्मण ऊंच और शूद्र नीच हैं। यह सर्वथा सच है कि यह मानने में कोई हिचक नहीं करें कि इसी कारण शूद्र का शोषण अनुचित नहीं है।

अंत में इस लेख का समापन करते हुए इसमें व्यक्त किए गए विचार के आधार पर हमारी यह धारणा निश्चित रूप से सच के पायदान पर खड़ी दिखाई देती है। कि जब तक आदमी का दिमाग (खोपड़ी) अर्थात् सोच नहीं बदलता है तब तक कोई सामाजिक क्रांति नहीं हो सकती है चाहे आदमी कितना ही बदल-बदल कर लाल, पीली व नीली टोपियां लगाता रहे। समाजवाद और साम्यवाद के नाम से आदमी टोपियां बदलता है वह किसी क्रांति का सूचक नहीं है, जब तक वह खोपड़ी नहीं बदलता है। हम स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही देख रहे हैं कि यहां साम्यवाद पनपा, समाजवाद पनपा और घोर पाखंड विरोधी अम्बेडकरवाद पनपा किन्तु यह सब ब्राह्मणवाद से डूबते चले गए और अपना स्वरुप ही खो बैठे। इस बिन्दु पर हमारा कथन सर्वथा कसौटी पर यही सही है कि जब तक व्यक्ति और समाज अपनी सोच नहीं बदलता किसी भी प्रकार के परिवर्तन की आशा निर्मूल है।

- समाप्त -

अनुसूचित जाति एवं जनजाति छात्रों के लिए
निःशुल्क उच्च शिक्षा का बेहतरीन मौका

आर्थिक कठिनाइयों के कारण दलित छात्र उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, जो चिंता का विषय है। अजा/जजा परिसंघ के रा0 चेयरमैन, डॉ0 उदित राज जी, सभी शिक्षण संस्थानों से अपील करते रहे हैं कि वे अपने यहां दलित छात्रों की निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करके अपने सामाजिक दायित्यों को निभाएं। इसी क्रम में भगवान महावीर ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स के चेयरमैन डॉ0 संजय जैन ने वायदा किया है कि वे अपने संस्थान में यथासंभव दलित छात्रों को निःशुल्क शिक्षा देगें। इनके संस्थान में निम्नलिखित उच्च तैकनिक पाठ्यक्रमों की सुविधा है -

B.Arch, Polytechnic Diploma, B.Tech, M.Tech, BBA, BCA, D.Ed., JBT, B.Ed., M.Ed., B.Pharma, M. Pharma, C.Ped, B.P.Ed., M.P. Ed.

contact
(A Group of Jain Minority Institutions)
Bhagwan Mahaveer Group of Institutions
(Approved by AICTE, New Delhi, Ministry of HRD, Govt. of India, & Affiliated to DTE, Haryana and DCR University of Science & Technology Murthal, Sonepat (Haryana))
For Admission & Other details Visit at www.msitsnp.in or Contact :-
Prof : (Dr.) Sanjay Jain, Chairman, M.- +91-9810628607
Prof : (Dr.) O. P. Sharma, Registrar, M.- +91-8607400783 &

Hostel facility available on payment basis.

5 जून, 2014 को परिसंघ की उत्तर प्रदेश इकाई ने डा0 उदित राज को सांसद चुने जाने . . . .

पृष्ठ 1 का शेष ...

गया प्रसाद रावत, आर0 पी0 सरोज, सियाराम रावत, माया राम, राम चन्द्र पासवान, मुख्तार रावत, दिनेश कुमार रावत, हरी प्रकाश नीरज चक, राधेश्याम, राज कुमार, वेद प्रकाश, केदार नाथ, शीतला प्रसाद, राम स्वरूप, संजय कुमार, जितेन्द्र कुमार आदि ने काफिलों को रोक कर मा0 डॉ0 उदित राज जी को माला पहनाकर स्वागत किया । तत्पश्चात डा0 उदित राज के काफिलों को भव्य बनाने के लिए अपनी-अपनी गाड़ियॉ पीछे लगाकर चल पड़े । काफिला अपने निर्धारित कार्यक्रम पर आगे बढ़ता हुआ कृष्णा नगर, आलमबाग, के0के0सी होते हुए हजरतगंज चौराहा लखनऊ स्थित बाबा साहब डॉ0 अम्बेडकर प्रतिमा पहुॅचा। मा0 डॉ0 उदित राज सांसद चुने जाने तथा प्रथम लखनऊ आगमन पर बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया, प्रतिमा स्थल पर उपस्थित लोगों का अभिवादन करते हुए सांसद एवं राष्ट्रीय चेयरमैन मा0 डॉ0 उदित राज ने बाबा साहब के कारवॉ को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया । तत्पश्चात हजरतगंज से काफिले के साथ डॉ0 उदित राज जी वी0वी0आई0पी0 गेस्ट हाउस लखनऊ पहुॅचे जहॉ विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों से वार्ता करने के बाद ठीक 1.30 बजे स्वागत समारोह स्थल रवीन्द्रालय सभागार, चारबाग पहुॅचे। सभागार में लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर, हरदोई शाहजहॉपुर, कानपुर, औरैया, बरेली, रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, मुजफ्फर नगर, फतेहपुर, कौशाम्बी, इलाहाबाद, प्रतापगढ़, भदोही, सोनभद्र, बाराबंकी, फैजाबाद, गोरखपुर, महाराजगंज, झांसी, कन्नौज, वाराणसी, गोण्डा, बहराइच, रायबरेली, सुल्तानपुर, जौनपुर आदि विभिन्न जिलों से कर्मचारी, अधिकारी एवं समाज सेवीगण डॉ0 उदित राज जी के आगमन पर खड़े होकर नारे लगा रहे थे, डॉ0 उदित राज जिन्दाबाद, डॉ0 उदित राज संघर्ष करो, हम तुम्हारे साथ हैं, बाबा साहब अमर रहें आदि । कार्यक्रम का उद्घाटन लखनऊ शहर के प्रथम नागरिक मा0 डॉ0 दिनेश शर्मा जी, महापौर लखनऊ ने बाबा साहब डॉ0 अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण तथा भगवान बुद्ध के चित्र पर पुष्प चढ़ा कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया । स्वागत समारोह में मा0 डॉ0 उदित राज सांसद एवं राष्ट्रीय चेयरमैन परिसंघ एवं मा0 कौशल किशोर सांसद एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष पारख महासंघ तथा मा0 डॉ0 दिनेश शर्मा, महापौर लखनऊ को 51 किलो की बड़ी माला पहनाकर भव्य स्वागत किया गया । रेलवे से राधेश्याम राम ने टीम के साथ स्वागत कर भगवान बुद्ध की प्रतिमा भेंट की । जनगणना विभाग, व्यापार कर, जल निगम, पोस्टल विभाग, उ0प्र0 सचिवालय, पशुपालन विभाग, शिक्षा विभाग, आयकर विभाग, दूरदर्शन/आकाशबाणी, गेल इण्डिया, जल संस्थान, सहकारिता, आवास विकास, सिंचाई विभाग, इंश्योरेंश, बैंक, बीमा, लोक निर्माण विभाग आदि विभिन्न विभागों एवं सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों ने अपनी टीम के साथ अतिथियों को माला पहनाकर स्वागत किया। अनुसूचित जाति/जनजाति परिसंघ द्वारा आयोजित स्वागत समारोह को सम्बोधित करते हुए डॉ0 दिनेश शर्मा, महापौर लखनऊ ने कहा कि कर्मचारी/अधिकारी परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सांसद डा0 उदित राज, पारख संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सांसद मा0 कौशल किशोर को जीत की हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि डा0 उदित राज जी को भारतीय जनता पार्टी में आने से पार्टी को काफी लाभ हुआ है इसलिए डॉ0 उदित राज जी के नेतृत्व मे ही दलित समुदाय को भी लाभ मिलेगा । सभागार में भारी भीड़ देख महापौर ने प्रदेश अध्यक्ष भवन नाथ को हृदय से बधाई और प्रदेश से आये परिसंघ के पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया । नव निर्वाचित सांसद कौशल किशोर (पारख संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष) ने स्वागत समारोह में कहा कि हम सब लोग मिलकर दलितों के हकों की लड़ाई लड़ेंगे । मा0 कौशल किशोर ने कहा कि आज आप सभी ने मा0 डॉ0 उदित राज जी को और मेरा भव्य स्वागत किया है, मैं परिसंघ के प्रदेश भर से आये सभी पदाधिकारियों का आभारी हूॅ, हमारी जब भी जरूरत समझे, मुझे सेवा करने का अवसर जरूर दें, मैं तो कहता हूॅ कि मेरा नम्बर जिसकी जेब में है, समझो सांसद उसकी जेब में है । मैं आधी रात में भी आप लोगों से बात करूंगा । स्वागत समारोह को सम्बोधित करते हुए परिसंघ के प्रदेश अध्यक्ष भवन नाथ ने कहा कि 17 वर्षो के बाद हम लोगों को सफलता मिली है, आज दलितों के मसीहा, दलितों के हकों की लड़ाई लड़ने वाले, पूरी दुनिया में अलग पहचान बनाने वाले परिसंघ के राष्ट्रीय चेयरमैन मा0 डॉ0 उदित राज जी सांसद चुने जाने के बाद पहली बार लखनऊ आये हैं, पूरे प्रदेश का दलित कर्मचारी/अधिकारी, समाजसेवी गण पूरे गर्मजोशी के साथ उनका स्वागत करने व एक झलक अपने आप को रुबरु होने तथा माला पहनाने के लिए रवीन्द्रालय सभागार में उमड़ पड़ा। रवीन्द्रालय सभागार में भारी भीड़ को देखकर उत्साहित भवन नाथ पासवान ने कहा पूरे दलित समाज का कर्मचारी/अधिकारी आशान्वित है कि अब मा0 डॉ0 उदित राज बड़े संघर्षो के बाद संसद में पहुॅचे हैं, तो 131 सांसदों पर दलित मुद्दों को लेकर भारी पड़ेंगे, और दलितों के हकों की आवाज अब संसद में उठायेंगे । भवन नाथ पासवान जहॉ इतना उत्साहित थे वहीं पर असंतोष व्यक्त करते हुए डा0 दिनेश शर्मा

रवीन्द्रालय, लखनऊ में आयोजित डॉ0 उदित राज के स्वागत समारोह में उपस्थित जनसमूह का एक दृश्य

का ध्यान आकर्षित करते हुए अपनी पीड़ा को व्यक्त किया और कहा जब डा0 उदित राज जी राष्ट्रीय चेयरमैन परिसंघ भारतीय जनता पार्टी ज्वाइन करने जा रहे थे तो देश भर की मीडिया ने कहा कि दलित नेता डॉ0 उदित राज भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए, डॉ0 उदित राज के बीजेपी में आने से दलितों का रुझान बीजेपी की ओर तेजी से बढ़ा, लेकिन भारी बहुमत से बीजेपी की सरकार बनने तक डॉ0 उदित राज जी को मीडिया प्रचारित करती रही कि डॉ0 उदित राज कैबिनेट मंत्री बनाये जायेंगे, यहॉ तक कि बीजेपी के वरिष्ठ नेता भी कहते रहे कि डॉ0 उदित राज जी को बड़ी जिम्मेदारी दी जायेगी, लेकिन मंत्रि-मण्डल में डॉ0 उदित राज जी को जगह न दिये जाने पर पूरे देश के दलित, पिछड़े, आदिवासियों में निराशा हुई है । मेरा तो आग्रह है कि डॉ0 दिनेश शर्मा जी महापौर से पूरे देश का दलित आहत हुआ है, इसका संदेशा आपके माध्यम से बीजेपी के वरिष्ठ नेतागणों तक पहुॅचाये, हम सभी आपके आभारी होगें । प्रदेश, मण्डल व जिलों से आये सभी पदाधिकारियों को धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया, स्वागत व अभिनन्दन किया। अनुसूचित जाति/जनजाति परिसंघ द्वारा आयोजित स्वागत समारोह को रविन्द्रालय चारबाग लखनऊ में सम्बोधित करते हुए सांसद एवं राष्ट्रीय चेयरमैन परिसंघ मा0 डॉ0 उदित राज जी ने प्रदेश भर से आये जिला मण्डल प्रदेश व सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों को भव्य स्वागत के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि सत्रह वर्षो में परिसंघ पूरे देश में आन्दोलन चलाकर भारत के संविधान में तीन-तीन संशोधन कराया है हम चाहते है कि पूरे प्रदेश के 70-75 जिलों में परिसंघ की इकाई जो सुस्त पड़ी है या नहीं बनी है उसे तैयार कर जिलों में तथा मण्डल स्तर पर सम्मेलन कर कमेटी मजबूत किया जाय आज मंच पर सभी को मिलकर पूरे प्रदेश में संगठन तैयार करना चाहिए जिससे दलित पिछड़े आदिवासी समाज की भागीदारी सुनिश्चित करायी जा सके डॉ0 उदित राज ने कहा कि हम किसी लालच में या अपने स्वार्थ में भारतीय जनता पार्टी नहीं ज्वाइन किया और न ही अकेले अपने मन से किया है बल्कि पूरे देश के प्रदेश अध्यक्षों की मीटिंग नवम्बर, 2013 में नागपुर में आयोजित करके सभी से सहमति ली गयी थी जिसमें भवन नाथ पासवान ने भी सहमति दी है। भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता लेते समय भी हमने अपने उद्बोधन में कहा था कि हम केवल सांसद बनने के लिए नहीं बल्कि दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों की भागीदारी हर जगह सुनिश्चित कराने के लिए अपने देश भर में 20 लाख कर्मचारी/अधिकारियों के हितों के लिए भारतीय जनता पार्टी को मजबूत करने आया हूॅ, ऐसा हुआ भी, मैं अपने परिसंघ के समर्पित साथियों से कहना चाहता हूॅ कि बड़े आन्दोलन की तैयारी करके बाहर आवाज उठायें, मैं अन्दर से आवाज उठाऊंगा । 02 मार्च, 2014 को लखनऊ स्थित रमबाई अम्बेडकर मैदान में देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी ने अपने उद्बोधन में कहा था कि आने वाला दिन दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों का होगा । हमें पूर्ण आशा है कि दलितों, पिछड़ों व आदिवासियों के हितों की रक्षा भारतीय जनता पार्टी की सरकार में होगी । सभागार व मंच पर भारी भरकम भीड़ पर नजर डालते हुए मा0 डॉ0 उदित राज जी ने कहा कि यहॉ पर सभी हमारे नये पुराने साथी हैं, सभी का नाम जानता हूॅ, मंच पर एस0पी0सिंह, अनिल कुमार, डा0 बलराम, अमृत प्रकाश, डॉ0 दिनेश शर्मा, भवन नाथ पासवान, कौशल किशोर, राम सिंह आदि मौजूद हैं, भवन नाथ पासवान अगर लिस्ट दिये होते तो और नाम ले सकता था । सफल आयोजन के लिए भवन नाथ पासवान, एस0पी0 सिंह, शैलेन्द्र भारती, राम सजीवन, विकास मोगा आदि आयोजक मण्डल को बधाई व धन्यवाद ।

– भवन नाथ पासवान
प्रदेश अध्यक्ष, परिसंघ
9415158866

साथियो,

डॉ0 उदित राज ही शायद एकमात्र देश में ऐसे नेता होगें जिनकी आम लोगों से सीधी बात-चीत शुरुआती दिनों से आज तक जारी है। सांसद बनने के बाद कई बार जब वे पार्लियामेंट के अंदर या किसी खास सभा में होते हैं जहां पर वे दूरभाष पर बात नहीं कर पाते। अतः अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के पदाधिकारियों, आंदोलन के शुभचिंतकों एवं वॉयस ऑफ बुद्धा के पाठकों को सलाह दी जाती है कि वे डॉ0 उदित राज जी को मोइबल नम्बर - 09013869539 एवं 09013869549 पर भी सम्पर्क कर सकते हैं ।

विपश्यना साधना क्या है?

विमलेश मौर्य (अहमदाबाद)

विपश्यना आत्मनिरीक्षण द्वारा आत्मशुद्धि की अत्यंत पुरातन साधना-विधि है। जो जैसा है, उसे ठीक वैसा ही देखना-समझना विपश्यना है। लगभग 2500 वर्ष पूर्व भगवान गौतम बुद्ध ने विलुप्त हुई इस पद्धति का पुनः अनुसंधान कर इसे सार्वजनिक साधना-विधि का उद्देश्य विकारों का संपूर्ण निर्मूलन एवं परमविमुक्ति की अवस्था को प्रज्ञात करना है। इस साधना का उद्देश्य केवल शारीरिक रोगों को नहीं बल्कि मानव मात्र के सभी दुखों को दूर करना है।

विपश्यना आत्म-निरीक्षण द्वारा आत्मशुद्धि की साधना है। अपने ही शरीर और चित्तविशोधन का अभ्यास हमें सुख-शांति का जीवन जीने में मदद करता है। हम अपने भीतर शांति और सामंजस्य का अनुभव कर सकते हैं।

हमारे विचार, विकास, भावनाएं, संवेदनाएं जिन वैज्ञानिक नियमों के अनुसार चलते है, वे स्पष्ट होते हैं। अपने प्रत्यक्ष अनुभव से हम जानते हैं कि कैसे विकार बनते हैं, कैसे बंधन बंधते हैं और कैसे इनसे छुटकारा पाया जा सकता है। हम सजग, सचेत, संयमित एवं शांतिपूर्ण बनते हैं।

परंपरा

भगवान बुद्ध के समय से निष्ठावान आचार्यों की परंपरा ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस ध्यान-विधि को अपने अक्षुण्ण रूप में बनाए रखा। इस परंपरा के वर्तमान आचार्य श्री सत्य नारायण गोयन्काजी हैं। वे भारतीय मूल के हैं लेकिन उनका जन्म म्यमार बर्मा) में हुआ एवं उनके जीवन के पहले पैंतालीस वर्ष म्यांमार में ही बीते। वहां उन्होंने प्रख्यात आचार्य सयाजी ऊबा खिन जो कि वरिष्ठ सरकारी अफसर थे, से विपश्यना सीखी। अपने आचार्य के चरणों में चौदह वर्ष विपश्यना का अभ्यास करने के बाद सयाजी ऊबा खिन ने उन्हें 1969 में लोगों को विपश्यना सिखलाने के लिए अधिकृत किया। उसी वर्ष वे भारत आये और उन्होंने विपश्यना के प्रचार-प्रसार का कार्य शुरू किया। तबसे उन्होंने विभिन्न सम्प्रदाय एवं विभिन्न जाति के हजारों लोगों को भारत में और भारत के बाहर पूर्वी एवं पश्चिमी देशों में विपश्यना का प्रशिक्षण दिया है। विपश्यना शिविरों की बढ़ती मांग को देखकर 1982 में श्री गोयन्काजी ने सहायक आचार्य नियुक्त करना शुरू किया।

शिविर

विपश्यना दस-दिवसीय आवासीय शिविरों में सिखाई जाती है। शिविरार्थियों को अनुशससन संहिता, का पालन करना होता है एवं विधि को सीख कर इतना अभ्यास करना होता है जिससे कि वे लाभान्वित हो सके। शिविर में गंभीरता से काम करना होता है। प्रशिक्षण के तीन सोपान होते हैं। पहला सोपान - साधक पांच शील पालन करने का व्रत लेते हैं, अर्थात् जीव-हिंसा, चोरी-झूठ बोलना, अब्रह्मचर्य तथा नशे-पते के सेवन से विरत रहना। इन शीलों का पालन करने से मन इतना शांत हो जाता है कि आगे का काम करना सरल हो जाता है। अगला सोपान - नासिका से आते-जाते हुए अपने नैसर्गिक सांस पर ध्यान केंद्रित कर अनापान नाम की साधना का अभ्यास करना। चौथे दिन तक मन कुछ शांत होता है, एकाग्र होता है एवं विपश्यना के अभ्यास के लायक होता है - अपनी काया के भीतर संवेदनाओं के प्रति सजग रहना, उनके सही स्वभाव को समझना एवं उनके प्रति समता रखना। शिवरार्थी दसवें दिन मंगल मैत्री का अभ्यास सीखते हैं। एवं शिविर - काल में अर्जित पुण्य का भागीदार सभी प्राणियों को बनाया जता है।

इस साधना में सांस एवं संवेदनाओं के प्रति सजग रहने के अभ्यास के बारे में एक वीडियो निःशुल्क विक्टाइम मूवी प्लेयर के जरिए देखा जा सकता है। यह साधना मन का व्यायाम है। जैसे शारीरिक व्यायाम से शरीर को स्वस्थ बनाया जाता है वैसे ही विपश्यना से मन को स्वस्थ बनाया जा सकता है।

साधना विधि का सही लाभ मिले इसलिए आवश्यक है कि साधना का प्रयास शुद्ध रूप में हो। यह विधि व्यापरीकरण से सर्वथा दूर है एवं प्रशिक्षण देने वाले आचार्यों को इससे भी आर्थिक अथवा भौतिक लाभ नहीं मिलता है। शिविरों का संचालन स्वैच्छिक दान से होता है। रहने एवं खाने का भी शुल्क किसी से नहीं लिया जाता। शिविरों का पूरा खर्च उन साधकों के दान से चलता है जो पहले किसी शिविर से लाभान्वित होकर दान देकर बाद में आने वाले साधकों को लाभान्वित करना चाहते हैं।

निरंतर अभ्यास से ही अच्छे परिणाम आते हैं। सारी समस्याओं का समाधान दस दिन में ही हो जायेगा। ऐसी उम्मीद नहीं करनी चाहिए। दस दिन में साधना की रूपरेखा समझ में आती है, जिससे की विपश्यना जीवन में उतारने का काम शुरू हो सके। जितना-जितना अभ्यास बढ़ेगा, उतना दुखों से छुटकारा मिलता चला जाएगा और उतना साधक परमुक्ति के अंतिम लक्ष्य के करीब चलता जायेगा। दस दिन में ही ऐसे अच्छे परिणाम जरूर आएंगें जिससे जीवन में प्रत्यक्ष लाभ मिलना शुरू हो जायेगा।

सभी गंभीरतापूर्वक अनुशासन का पालन करने वाले लोगों का विपश्यना शिविर में स्वागत है, जिससे कि वे स्वयं अनूभूति के आधार साधना को परख सके एवं उससे लाभान्वित हों। जो भी गंभीरता से विपश्यना को आजमायेगा वह जीवन में सुख-शांति पाने के लिए एक प्रभावशाली तकनीक प्राप्त कर लेगा।

...

भारत का मीडिया क्या करता है?

बी. एल. मेघवाल (उदयपुर, राज.)

कुछ समय पहले दैनिक भास्कर राजस्थान के सभी संस्करणों में एक बड़ी खबर छपी थी। खबर का शीर्षक था - 'सभी चोर हैं... ।'

इस खबर में बताया गया था कि एक मजिस्ट्रेट का रीडर, रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया था। तब उसने कहा था - ''सभी चोर हैं।'' प्रश्न ये उठता है कि इस देश में प्रधानमंत्रियों, मुख्यमंत्रियों, आई.ए.एस., आई.पी.एस. से लगा कर चपरासियों तक के ऊपर रिश्वत के आरोप लगे हैं और उन्हें अखबारों ने छापा है। इस देश में आज यह मान्यता हो गयी है कि सामान्यतः रिश्वत लेते सभी हैं पर जो पकड़ा जाता है वह चोर कहलाता है। इस मान्यता के बावजूद दैनिक भास्कर ने केवल इसी खबर का ही शीर्षक क्यों बनाया है? ''सभी चोर हैं।''

इस संदर्भ में एक और उदाहरण है। राजस्थान की राजधानी जयपुर में एक लड़की के साथ लम्बे समय तक उसे डरा-धमकाकर सामूहिक बलात्कार होता रहा है। उस लड़की का परिचय देश, प्रदेश के सभी अखबारों ने जाहिर नहीं किया। इसके विपरीत यही अखबार बलात्कार प्रकरणों में पीड़िता के पूरे खान-दान का विवरण छाप देते हैं। इतना ही नहीं शीर्षक भी देते हैं - 'दलित या आदिवासी महिला के साथ सामूहिक बलात्कार।' सवाल ये उठता है कि ये अखबार किसी का परिचय क्यों छिपाते हैं और किसी के खानदान और रिश्तेदारों तक को उस घृणित काण्ड में लपेटने से बाज क्यों नही आते?

पहले प्रकरण में जिस रीडर ने कहा ''सभी चोर हैं'' वह जाति से अग्रवाल है, अल्पजन समुदाय का घटक। दूसरे प्रकरण में जिस लड़की का परिचय छिपाया जाता है वह जाति से ब्राह्मण है। भारतीय समुदाय की सरगना जाति अर्थात् धरती की श्रेष्ठतम जाति-भूदेव। आप कोई भी अखबार उठा कर देख लें उसमें यह नीति मिलेगी कि अल्पजनों के दोषों और दूसरी बातों को दाब-ढांक कर छापो और बहुजनों के दोषों और दूसरी बातों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करो। उनके खानदान और नाते-रिश्तों के लोगों को भी लपेटे और यह प्रमाणित करो कि बहुजन यानी अजा/जजा और पिछड़ी जातियों के लोग लुच्चे-लफंगे चोर बदमाश हैं।

अखबारों की यह दोहरी और दोगली नीति केवल इसी मामले में नहीं है और भी अनेक मामलों में है। ये अखबार सामान्यतः भ्रष्टाचार को उचित और अफसरों-कर्मचारियों के भ्रष्टाचार को अनुचित मान कर चलते हैं। चुनावी चंदे लेना और राजनीति को पैसों का खेल बनाने वालों की खबरें छापना और उनकी चाटुकारी को भी ये बुरा नहीं मानते। चुनाव किसी भी प्रकार का हो, उम्मीदवार इनके लिए जर्सी गाय के समान है। किसी में हवा भरने और किसी की हवा निकालने में ये माहिर खिलाड़ी होते हैं। इनके मापदण्ड है कर्मचारी, अधिकारी चोरी करे तो चोर और नेता चोरी करें तो साहूकार, बशर्ते कि वह अल्पजन होना चाहिए।

राजस्थान के सुखाड़िया मंत्री मंडल में मंत्री रहे कुम्भाराम आर्य पर जब गुड़ खरीद में भ्रष्टाचार का आरोप लगा था तो उन्होंने जिस सुर में उत्तर दिया था वह सुर आज सुनाई नहीं देता। इस जाट भाई ने कहा था - ''लोग लोहा खा जाते है, सीमेंट खा जाते हैं और जाने क्या क्या खा जाते हैं। मैंने खाया भी है तो खाने वाला गुड़ ही तो खाया है।''

भारतीय अखबारों में ये जो चोर, साहूकार के मनमाने पैमाने हैं, ये इनकी बेईमानी और बदमाशी के पुख्ता सबूत हैं। इनके चलते हर ऐरा-गैरा संवददाता अच्छे-अच्छे अफसरों की हवा खिसका कर चौथ वसूली कर लेता है और अफसर उससे डरे सहमें रहते हैं। इस प्रकार इस देश में अखबार तंत्र, जनतंत्र की अर्थी का बांस बनाया जा रहा है।

अल्पजनों और बहुजनों में इस प्रकार भेद करने वाला भारत का अखबार तंत्र, अल्पजनों की छवि बनाने और बहुजनों की छवि बिगड़ने का काम आज ही नहीं कर रहा बहुत पहले से कर रहा है। इसी अखबार तंत्र ने परतंत्र भारत में बाबा साहेब डॉ0 अम्बेडकर जैसे महामानव के लिए भी 'अंग्रेजों के पिट्ठू' 'अंग्रेजों के दलाल', राक्षस और गद्दार जैसे शब्दों का प्रयोग किया था। इस तंत्र के लिए उन्हें 1941 में अपने 'रानाडे गांधी एण्ड जिन्ना' भाषण में कहना पड़ा कि भारतीय मीडिया में तो व्यावसायिक नैतिकता भी नहीं है। इनकी रीति-नीति में आज भी कोई परिवर्तन नहीं आया है।

इस संदर्भ में, मैं कांशीरामजी के इस कथन से शत-प्रतिशत सहमत हूं - ''दुश्मन से जो दोस्ती की उम्मीद रखता है उससे बड़ा बेवकूफ दुनिया में दूसरा कोई नहीं होता।'' दोषी अल्पजन तो हैं ही कि उन्होंने कथित जनतंत्रीय भारतीय में जनतंतत्र विरोधी अखबार तंत्र का छल फैला रखा है, किन्तु उनसे बड़े दोषी वे बहुजन है। जो गधे की तरह इस प्रकार के तंत्र का बोझ अपनी पीठ पर लादे चल रहे हैं, जो उनकी छवि धूमिल करने से बाज नहीं आता।

अखबार तंत्र बनते देर भी न लगे :

हमने इस दिशा में पहल की। 'परिवर्तन प्रभाकर' का साल भर तक साप्ताहिक के रूप में प्रकाशन किया। इसे साकार साहस बनाने का प्रयास किया। दो लाख से अधिक राशि अपनी जेब से लगायी। इस क्रम में अच्छे-अच्छे अधिकारियों को यह कहते सुना - ''यह तो बहुत कठिन कार्य है।'' हमारे लोग पस्त हिम्मत लोग हैं। जिन्हें स्वयं पर विश्वास नहीं होता है वह दूसरे पर भी विश्वास नहीं कर पाते। 'परिवर्तन प्रभाकर' को दैनिक करने के लिए निकाला था किन्तु हमारे लोगों की पस्त हिम्मती ही आड़े आ रही है। आज की तारीख में भारत भर में लगभग 35 लाख अजा/जजा के लोग सरकारी सेवाओं में हैं और इतने ही पेंशनर हैं। कुल मिलाकर सत्तर लाख लोग रहते हैं। ये लोग अल्पजनों के वर्चस्व वाले दैनिक साप्ताहिक व मासिक पत्र-पत्रिकाएं खरीदते हैं, पढ़ते हैं। इन्हें इस बात का अहसास ही नहीं है कि उनका यह अखबार खरीदना और अखबार पढ़ना उस अखबार तंत्र को शक्ति दे रहा है जो उनकी छवि लुच्चे-लफंगों और चोर दुश्मनों की बनाने पर तुला हुआ है। इस देश के बहुजनों के पास जनबल और धनबल दोनो हैं। जो नहीं है वह है आत्मबल। जिसमें आत्मविश्वास की कमी होती है। वह आसानी से मानसिक गुलामी का शिकार हो जाता है। देश में अजा/जजा, ओबीसी इसके सबसे अच्छे उदाहरण हैं। इनके पास अपना कोई भी तंत्र नहीं है। अनुसूचित जाति ने मीडिया के क्षेत्र में अनेक प्रयास किये लेकिन सहकार का अभाव रहा। अजा ने दलित साहित्य के क्षेत्र में सार्थक कार्य किये बावजूद जनतंत्र का चौथा स्तम्भ यहां भी तैयार नहीं हो पाया। आदिवासी जिनके पास अलिखित साहित्य व सुन्दर संस्कृति है किन्तु लेखक, साहित्यकार और विचारक नहीं है। इनकी पीड़ा व कहानी को सवर्ण लिखता है। इनके पास भी मीडिया नहीं है। छत्तीसगढ़ देश का इकलौता ऐसा राज्य है जहां से 'आदिवासी सत्ता' विगत 7-8 सालों से मासिक पत्रिका के रूप में निरंतर प्रकाशित हो रही है। साहित्यिक पत्रिका के रूप में एक त्रैमासिक 'अरावली उद्घोष' है जो 25 वर्षों से उदयपुर से प्रकाशित है। सहकार का यहां भी स्पष्ट अभाव दिखाई देता है। मीडिया बनता है। अन्य पिछड़ी जातियां तो अपना सबकुछ गंवा और भुला चुकी है अतः मीडिया व साहित्य की सबसे निराशाजनक स्थिति इसी वर्ग में है।

जनतंत्र में अखबार तंत्र आम जनता का सबसे सफल हथियार होता है। दुर्भाग्य से हमारे लोग आत्मविश्वास विहीन होकर संघर्ष से मुंह चुराते हैं। बहुजन को अल्पविश्वासी होना पड़ेगा, स्वयं पर भरोसा करना पड़ेगा। वर्तमान में भारत की प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया क्या कर रहा है, किसी से छिपा नही है। कुछ अपवादों को छोड़ दें तो पूरे चुनाव में अजा, जजा व पिजा के मुद्दे पूरी तरह से गायब हैं। सारे अखबार के मालिक उद्योगपति, सभी चैनलों के मालिक पूंजीपति, इनके संपादक ब्राह्मण, लेखक व योजनाकार भी ब्राह्मण। वे जो दिखाना चाहते हैं, वे जो पढ़ाना चाहते हैं, हम वही देख व पढ़ रहे हैं। इस पूरे तमाशे में अजा, जजा और पिजा कहां हैं? नहीं हैं तो क्यों नहीं हैं? क्या हम चाहते हैं कि यह तस्वीर बदलनी चाहिए? इस स्थिति पर अदम गोंडवी की गजल के ये अंश सटीक बैठते हैं-

सच कहूं तो माफ करना
आज अपने देश में
कोख ही जखेज है
अहसास बंजर हो गया।

...

आम्बेडकर से जुड़ें नेपाल के दलित : ओमप्रकाश गहतराज

जातिगत भेदभाव और छुआछूत प्रथा को समाप्त करने का एक ही रास्ता है और वह है डॉ0 अम्बेडकर का नारा 'शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो'

विद्याभूषण रावत

ओमप्रकाश गहतराज नेपाल के आम्बेडकरवादी आंदोलन के मानो विश्वकोष हैं। वे वरिष्ठ दलित नेता मोहनलाल कपाली से लंबे समय तक जुड़े थे। जब, सन् 1956 में, बाबा साहेब आम्बेडकर विश्व बौद्ध सम्मेलन में भाग लेने काठमांडू गए थे तब कपाली ही उन्हें शहर की दलित बस्तियों में ले गए थे। गहतराज ने कपाली की जीवनगाथा भी लिखी है। उन्होंने नेपाल सरकार में दलितों और उनकी बेहतरी से संबंधित कई सरकारी पदों पर कार्य किया है। वे अब भी नेपाल के दलित आंदोलन में भागीदारी कर रहे हैं। गहतराज सन् 1980 के दशक में प्रकाशित दलित साहित्यिक त्रैमासिक 'प्रतिनिधि' के मुख्य संपादक रहे हैं। उनके लेख कई प्रतिष्ठित समाचारपत्रों, पत्रिकाओं आदि में प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत है विद्याभूषण रावत से उनकी बातचीत के चुनिंदा अंश रू

आपने डाक्टर आम्बेडकर की 1956 में नेपाल यात्रा के बारे में चर्चा की थी। यह जानना दिलचस्प होगा कि नेपाल के दलित समुदाय ने बाबासाहेब का स्वागत कैसे किया था ? क्या आप इस यात्रा के बारे में हमें कुछ और बता सकते हैं-उन लोगों के बारे में जो उनके मेजबान थे और उन स्थानों के बारे में जहां बाबा साहेब गए थे। क्या उन्होंने नेपाल के लोगों को कोई सलाह दी थी ?

नेपाल की सरकार और बौद्ध समुदाय ने डाक्टर आम्बेडकर की मेजबानी की थी। वे कई दलित बस्तियों में गए थे, विशेषकर देवपाटन (पशुपति मंदिर के आसपास), सहागल (ललितपुर), ढालकू-छेत्रापति (काठमांडू) व भक्तपुर। दलितों की बदहाली देखने के बाद बाबासाहेब ने उन्हें सलाह दी थी कि वे एक व्यापक संघर्ष शुरू करें।

वे कहां रुके थे ?

चूंकि नेपाल की सरकार और बौद्ध समुदाय ने डाक्टर आम्बेडकर को निमंत्रित किया था अतरू वे सरकारी अतिथिगृह शीतल निवास में ठहरे थे। यह अतिथिगृह अब राष्ट्रपति का निवास है।

बाबा साहेब ने भारत में बौद्ध धर्म को पुनर्परिभाषित किया था। उनकी यह मान्यता थी कि बौद्ध धर्मही अछूतों की मुक्ति का एकमात्र रास्ता है। क्या बौद्ध धर्मने नेपाल में भी उसी तरह की मुक्तिदायिनी भूमिका अदा की है या फिर यहां के दलित, सांस्कृतिक दृष्टि से हिन्दू ही बने हुए हैं ? क्या बाबासाहेब के इस संदेश को नेपाल में फैलाने के लिए कोई आंदोलन चल रहा है ?

जहां तक मैं जानता हूं, नेपाल में किसी बौद्ध ने दलितों को जातिगत भेदभाव से मुक्ति दिलाने के लिए आंदोलन नहीं चलाया। बौद्ध अपने धार्मिक प्रवचनों में समानता के मुद्दे पर कम ही बोलते हैं। हम सामाजिक कार्यकर्ताओं ने बाबासाहेब के संदेश का नेपाल में प्रचार-प्रसार करने के लिए आंदोलन शुरू किए हैं।

मोहनलाल कपाली पर लिखी आपकी पुस्तक के अनुसार, बाबा साहेब पशुपतिनाथ मंदिर भी गए थे ? क्या आपको पक्का पता है कि ऐसा हुआ था ? क्या बाबा साहेब की पशुपतिनाथ मंदिर यात्रा की कोई फोटो उपलब्ध है ? मंदिर यात्रा के बाद उनकी क्या प्रतिक्रिया थी ? क्या उन्होने स्वयं मंदिर जाने की इच्छा व्यक्त की थी या फिर स्थानीय समुदाय के अनुरोध पर वे वहां गए थे ?

पशुपतिनाथ मंदिर के आसपास दलितों की एक बड़ी बस्ती है जिसका नाम है देवपाटन। पहले इसे देवपाटन कहा जाता था अब इसे पशुपति कहा जाता है। डाक्टर आम्बेडकर इस इलाके में दलितों की हालत देखने गए थे, पशुपति मंदिर में दर्शन करने नहीं। रास्ते में उन्होंने पशुपतिनाथ मंदिर को देखा परंतु उन्होंने वहां पूजा-अर्चना नहीं की। आज भी उस इलाके में हजारों दलित रह रहे हैं। न तो दलित नेता चाहते थे कि बाबा साहेब वहां जाएं और ना ही बाबासाहेब की ऐसी कोई इच्छा थी। बात बस यह थी कि मंदिर, दलित बस्तियों की ओर जाने वाले रास्ते पर था।

नेपाल में दलितों की स्थिति को देखकर बाबासाहेब बहुत व्यथित हुए होंगे। उनकी क्या प्रतिक्रिया थी ?

नेपाल की सरकार के दलितों के प्रति दृष्टिकोण से डाक्टर आम्बेडकर बहुत क्रोधित थे। दिल्ली लौटने के बाद उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसा लगता है कि नेपाल के नेताओं ने उनके साथ छल किया है। दलित बस्तियों की यात्रा से लौटने के बाद दलित नेताओं के दल के नेता सहर्षनाथ कपाली, जो कि मोहनलाल कपाली के सबसे बड़े भाई थे, ने शीतल निवास पर बाबा साहेब के सम्मान में एक चाय पार्टी का आयोजन किया। पार्टी में बाबा साहेब ने नेपाल के दलितों का आह्वान किया कि वे अपने अधिकार पाने के लिए संघर्ष शुरू करें।

आपने बताया था कि बाबा साहेब प्रधानमंत्री से मिलना चाहते थे और जब प्रधानमंत्री को यह बात पता चली तो वे स्वयं उनसे मिलने शीतल निवास पहुंचे। क्या आप इस मुलाकात का विवरण हमें दे सकते हैं ? क्या प्रधानमंत्री ने बाबासाहेब को कोई विशेष आश्वासन दिया था ?

मैंने कभी यह नहीं कहा कि बाबासाहेब प्रधानमंत्री से मिलना चाहते थे। जब वे दलित बस्तियों में गए तो दलितों की बदहाली देखकर वे बहुत क्रोधित हुए। इस यात्रा के दौरान जो सरकारी अधिकारी उनके साथ थे उन्होंने यह बात तत्कालीन प्रधानमंत्री तनकाप्रसाद आचार्य को बताई। जब बाबासाहेब शीतल निवास लौट आए तब प्रधानमंत्री ने उन्हें इस मसले पर बातचीत करने के लिए अपने निवास पर आमंत्रित किया। परंतु बाबासाहेब प्रधानमंत्री के निवास पर जाने के अनिच्छुक थे। अंततरू प्रधानमंत्री स्वयं शीतल निवास पहुंचे और उन्होंने बाबासाहेब को यह आश्वासन दिया कि दलितों की स्थिति सुधारने पर सरकार ध्यान देगी।

नेपाल के आम्बेडकरवादी आंदोलन के बारे में हमें बताइए। इसकी क्या उपलब्धियां रही हैं ? मोहनलाल कपाली की नेपाल में आम्बेडकरवाद और दलित आंदोलन को मजबूती देने में क्या भूमिका थी ?

नेपाल का आम्बेडकरवादी आंदोलन, दलित नेताओं द्वारा संचालित किया जाता है, गैर-दलितों द्वारा नहीं। दिवंगत मोहनलाल कपाली ने जीवनपर्यंत नेपाल के आम्बेडकरवादी आंदोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने बाबा साहेब के बारे में हमें बताया। आज नेपाल के अधिकांश दलित नेता यह मानते हैं कि बाबासाहेब का दर्शन ही जातिगत भेदभाव को मिटाने में सक्षम है।

क्या नेपाल के नागरिक समाज की दलितों के साथ हो रहे भेदभाव को समाप्त करने के प्रयासों में कोई भागीदारी है ? क्या दलित अधिकारोंके मुद्दे पर नेपाल में चल रहे विभिन्न आंदोलनों में एकमत है ?

जहां तक दलितों के साथ हो रहे भेदभाव की समाप्ति का प्रश्न है, इस प्रयास में नेपाल के नागरिक समाज की कोई भूमिका नहीं रही है। अलबत्ता दलित अधिकारों के लिए संघर्षरत् विभिन्न आंदोलनों में एकता है। नागरिक समाज के अधिकांश संगठनों का नेतृत्व ब्राह्मणों के हाथों में है।

नेपाल में दलितों की स्थिति कैसी है ? क्या सरकार ने उनकी बेहतरी के लिए आरक्षण जैसा कोई सकारात्मक कदम उठाया है ?

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, दलित, नेपाल की आबादी का 13.2 प्रतिशत है। परंतु आज भी मंत्रिमंडल में एक भी दलित सदस्य नहीं है। 75 मुख्य जिला अधिकारियों में से केवल 1 दलित है। संविधान सभा के 601 सदस्यों में से केवल 41 दलित हैं। सरकारी सेवाओं की भर्ती में दलितों का प्रतिशत एक से भी कम रहता है। सरकार ने दलितों की बेहतरी के लिए बहुत कम कानून बनाए हैं और जो कानून बनाए भी गए हैं, उनका ठीक से पालन नहीं होता है। इसका कारण यह है कि अधिकांश प्रमुख राजनैतिक दलों के शीर्ष नेता ब्राह्मण हैं। वे अपने परिवारों को प्राप्त विशेषाधिकार खोना नहीं चाहते।

नेपाल में छुआछूत को प्रतिबंधित कर दिया गया है परंतु फिर भी दलितों के साथ भेदभाव और छुआछूत बरकरार है। सरकार का इस मामले में क्या रुख है ? राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग और राष्ट्रीय दलित आयोग इस संबंध में क्या कर रहे हैं ? क्या उन्हें ऐसे अधिकारियों को अपने समक्ष प्रस्तुत होने का आदेश देने या उन्हें बर्खास्त करने का अधिकारहै, जो देश के कानूनों का उल्लंघन करते हैं ?

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग केवल सरकार से कानूनों को लागू करने की सिफारिश कर सकता है। जहां तक राष्ट्रीय दलित आयोग का सवाल है, वह संवैधानिक संस्था नहीं है इसलिए उसे कोई शक्तियां प्राप्त नहीं हैं। वह केवल संबंधित एजेंसी से न्याय करने की गुजारिश कर सकता है। इस संबंध में की गई शिकायतों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। सरकार ने राष्ट्रीय दलित आयोग व दलित विकास समिति के जरिए, दलितों को ही इस समस्या से निपटने की जिम्मेदारी सौंप दी है। गैर-दलितों की इस कार्य में कोई रुचि नहीं है।

वामपंथी संगठनों और पार्टियों की दलित आंदोलन को मजबूती देने में क्या भूमिका है ? आम्बेडकरवादी संगठन-अगर ऐसे संगठन नेपाल में हैं तो-वामपंथी संगठनों और पार्टियों की भूमिका को किस रूप में देखते हैं ? दलितों के हक की लड़ाई में माओवादियों की क्या भूमिका रही है ?

ये सब दलितों को केवल अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए इस्तेमाल करते हैं और उनका काम निकल जाने के बाद, वे दलितों से संबंधित मुद्दों को कचरे के डिब्बे में फेंक देते हैं। यही सच्चाई है। वामपंथी पार्टियों के अधिकांश नेता भी ब्राह्मण हैं इसलिए उनका रुख ऐसा है।

क्या राजनैतिक दल, दलितों को अपने संगठन में पर्याप्त प्रतिनिधित्व देने के लिए तैयार हैं ? या फिर वे अपनी वर्तमान नीति पर ही चलते रहना चाहते हैं।

वे दलितों को बहुत कम प्रतिनिधित्व देते हैं और जहां तक उच्च पदों का सवाल है, उनमें बिल्कुल भी नहीं। वे केवल अपने दानदाताओं को यह दिखाना चाहते हैं कि उनकी पार्टी का चरित्र समावेशी है।

फिर, नेपाल में जातिगत भेदभाव और छुआछूत कैसे समाप्त होगे ?

जातिगत भेदभाव और अछूत प्रथा को समाप्त करने का एक ही रास्ता है और वह है आम्बेडकर का नारा शिक्षित बनो संगठित रहो और संघर्ष करो।

सभार : फारवर्ड प्रेस

पाठकों से अपील

'वॉयस ऑफ बुद्धा' के सभी पाठकों से निवेदन है कि जिन्होंने अभी तक वार्षिक शुल्क/शुल्क जमा नहीं किया है, वे शीघ्र ही बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के नाम से टी-22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 को भेजें। शुल्क 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के खाता संख्या 0636000102165381 जो पंजाब नेशनल बैंक की जनपथ ब्रांच में है, सीधे जमा किया जा सकता है। जमा कराने के तुरंत बाद इसकी सूचना ईमेल, दूरभाष या पत्र द्वारा दें। कृपया 'वॉयस ऑफ बुद्धा' के नाम ड्राफ्ट या पैसा न भेजें और मनीआर्डर द्वारा भी शुल्क न भेजें। जिन लोगों के पास 'वॉयस ऑफ बुद्धा' नहीं पहुंच रहा है, वे सदस्यता संख्या सहित लिखें और संबंधित डाकघर से भी सम्पर्क करें। आर्थिक स्थिति दयनीय है, अतः इस आंदोलन को सहयोग देने के लिए खुलकर दान या चंदा दें।

सहयोग राशि:

पांच वर्ष : 600 रुपए

एक वर्ष : 150 रुपए

जीटीबी हास्पिटल में बाबा साहेब की123वीं जयंती एवं डॉ0 उदित राज का सम्मान कार्यक्रम सम्पन्न

डॉ. धनंजय कुमार

अनुसूचति जाति-जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के चिकित्सकों एवं कर्मचारियों के द्वारा दिनांक 23-06-2014 (सोमवार) को दिल्ली के गुरू तेग बहादुर अस्पताल में बाबा साहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर की 123वीं जयंती समारोह का आयोजन किया गया था। समारोह की अध्यक्षता गुरू तेग बहादुर अस्पताल एवं यू.सी.एम.एस. के अनुसूचित जाति/जन जाति चिकित्सक एवं कर्मचारी संघ के अध्यक्ष डॉ. धनंजय कुमार ने की । इस अवसर पर परिचर्चा आयोजित की गई जिसका विषय 'संवैधानिक संस्थाएं और दलित अधिकारों की रक्षा' थी । समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि अनुसूचित जाति-जन जाति संगठनों के अखिल भारतीय परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं माननीय सांसद (लोक सभा) डॉ. उदित राज ने दीप प्रज्वलित और बाबा साहेब के चरणों में पुष्पांजलि कर की। मंच का संचालन संघ के हरीश टम्टा और डॉ. वैशाली ने की समारोह में विशिष्ठ अतिथि के तौर पर श्री राजू परमार जी (माननीय सदस्य, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग भारत सरकार), श्री हरी राम सूद जी (पूर्व सदस्य, राष्ट्रीय सफाई आयोग भारत सरकार), डॉ. संजय पासवान जी (पूर्व मंत्री, भारत सरकार तथा राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा), श्री वीर सिंह धिंगान जी (पूर्व विधायक, सीमापुरी विधान सभा क्षेत्र), श्रीमती मीनाक्षी जी (महापौर, पूर्वी दिल्ली नगर निगम), डॉ. राज पाल चिकित्सा अधिक्षक, सफदरजंग अस्पताल और श्री विनोद कुमार जी (राष्ट्रीय महासचिव, अनुसूचित जाति-जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ) थे ।

अन्य आमंत्रित अतिथियों में डॉ. राकेश कुमार (जिला चिकित्सालय गौतम बुद्ध नगर, उ.प्र.), श्री ओम प्रकाश जी (प्रबन्धक, केनरा बैंक), ईला वर्मा (व्याख्यता, एस.सी.ई.आर.टी.), श्री आस मो. अंसारी (पूर्व सदस्य, राज्य सभा), श्री हरीश कुमार (वरिष्ठ अधिवक्ता, सुप्रीम कोर्ट), डॉ. भरत सागर , डॉ. विनोद कुमार, डॉ. अरविन्द कुमार, डॉ. राम टके, डॉ. परमेश्वर राम, डॉ. नाहर सिंह इत्यादि थे । जी.टी.बी. अस्पताल और यू.सी.एम.एस. के श्री राजेश कुमार (सहायक निबंधक), श्री एस.के. डोगरा (उप निबंधक), प्राचार्य डॉ. ओ.पी. कालरा, डॉ. बी.के. जैन (चिकित्सा अधीक्षक जी.टी.बी. अस्पताल), डॉ. अनिल यादव थे ।

संघ की ओर से कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री भगत सिंह, अशोक केम, हरीश टम्टा, सुन्दर कुमार, लीलू राम जी, रतन लाल कनेरा, अनिल निवारिया, वेद प्रकाश प्रधान जी, महेन्द्र सिंह, मोहन सिंह गहलौत, सिस्टर कुस्मा, सिस्टर सोना, सिस्टर सुनीता, संध्या सिंह, एस.एन. स्वामी डॉ. स्वाती, डॉ. वैशाली, डॉ. दिव्याश्री, डॉ. कपिल, डॉ. विनोद, डॉ. जैनेन्द्र चौहान, डॉ. निलीमा दास इत्यादि की मुख्य भूमिका थी ।

इस अवसर पर दिल्ली राज्य संविदा कर्मचारी संघ के महसचिव श्री गुलाब रब्बानी ने माननीय सांसद, डॉ. उदित राज जी को संघ का आजीवन संरक्षक मनोनित किये जाने की घोषणा की । श्री गुलाब रब्बानी ने दिल्ली राज्य के अस्पतालों में लंबे वर्षो से संविदा के आधार पर कार्यरत सहायक प्राध्यापकों, जूनियर स्पेसलिस्ट, पैरामेडिकल स्टाफ व स्टाफ नर्स की सेवाओं को नियमित किये जाने की मांग की । उन्होंने इस अवसर पर डॉ. उदित राज से पहल करने की मांग की । उन्होंने कहा कि वर्षो से संविदा पर कार्य करने वाले चिकित्सकों व कर्मचारियों को फिक्सड सैलरी दी जाती है और आवास की सुविधा, छुटिट्यां महंगाई भत्ता, मेडिकल की सुविधा, स्कूल की ट्यूशन फीस इत्यादि से वंचित रखा गया है ।

इस अवसर पर संघ की ओर से श्री हरीश टम्टा ने माननीय सांसद डॉ. उदित राज जी और राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के सदस्य, श्री राजू परमार जी को ज्ञापन सौंप कर जी.टी.बी. अस्पताल और यू.सी.एम.एस. में कार्यरत चिकित्सकों एवं कर्मचारियों की समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट कराते हुए जाँच की मांग की और दोषी पदाधिकारियों के विरुद्ध अनुसूचित जाति जन जाति अत्याचार निवारण अधिनियम, 1989 के तहत उचित कार्यवाही की मांग की:-

1. जी.टी.बी. अस्पताल में लाइजन ऑफिसर का पद वर्षो से रिक्त रहने के संबंध में हस्तक्षेप की मांग की ।

2.जी.टी.बी. अस्पताल में एस.सी/एस.टी. सेल के गठन की मांग की।

3.लंबे समय से नियमित डी.पी.सी. और पदोन्ति नहीं दिये जाने,

4. प्रशासन द्वारा तैयार रोस्टर में व्यापक रुप से अनियमिताओं ।

5.संविदा के आधार पर वर्षो से कार्यरत चिकित्सकों एवं कर्मचारियों की सेवा नियमित करने की मांग की।

6. उन्होंने जी.टी.बी. अस्पताल एवं यू.सी.एम.एस. में ठेकेदारी प्रथा समाप्त करने और आउटसोर्सिंग की प्रक्रिया जो जी.टी.बी. अस्पताल व लोक नायक अस्पताल में शुरू कर दी गई है अविलम्ब बन्द कराने की मांग की । उन्होंने आशंका व्यक्त की कि यदि इस प्रक्रिया को बंद नहीं किया गया तो एक दिन चिकित्सा अधिक्षक जैसे महत्वपूर्ण पद को भी सरकार समाप्त कर किसी कम्पनी को देखरेख का जिम्मा सौप देगी ।

7. डॉ. उदित राज से संघ के कार्यालय के लिए यू.सी.एम.एस. परिसर में कक्ष आवंटित कराने की मांग की ।

इस अवसर पर शिशु विभाग के विभागाध्यक्ष यू.सी.एम.एस. एवं जी.टी.बी. अस्पताल डॉ. एम.एम.ए.फरीदी ने आयोजकों को शुभ कामना देते हुए अल्पसंख्यक संस्थाओं की तरह दलित समाज के लिए भी शिक्षण संस्थाओं और विश्वविद्यालय के गठन की आवश्यकता पर जोर दिया ।

जी.टी.बी. हास्पिटल में इलैक्ट्रानिक मीडिया को संबोधित करते हुए डॉ0 उदित राज (बीच में)।

डॉ. राज पाल चिकित्सा अधिक्षक सफदरजंग अस्पताल ने शिक्षा पर जोर देते हुए समाज के नौकरी-पेशा लोगों से 'पेय बैक टू सोसायटी' के मंत्र पर चलने की सलाह दी और अन्य लोगों से अनुरोध किया कि दलित समाज के विकास में भागीदार बने ।

सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री हरीश कुमार ने इस कार्यक्रम के आयोजक डॉ. धनंजय कुमार सहायक प्राध्यापक प्लास्टिक सर्जरी विभाग गुरू तेग बहादुर अस्पताल को सफल आयोजन के लिए विशेष रूप से धन्यवाद देते हुए समारोह के मुख्य अतिथि अनुसूचित जाति जनजाति संगठनों के अखिल भारतीय परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष और माननीय सांसद डॉ. उदित राज का ध्यान बैक लौंग सीट (रिक्त सीटों) की ओर आकृष्ट कराते हुए उसे जल्द से जल्द भरने की प्रकिया शुरु करवाने की पहल की मांग की ।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि पूर्व मंत्री भारत सरकार और भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. संजय पासवान जी ने समाज के उत्थान में डॉ. उदित राज की भूमिका की प्रशंसा की तथा भविष्य में भी उनसे समाज के विकास में आगे रहने की अपेक्षा की तथा अपनी ओर से पूरे सहयोग का वादा किया । डॉ. संजय पासवान जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. धनंजय कुमार को धन्यवाद दिया।

समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि माननीय सांसद और अनुसूचित जाति जनजाति संगठनों के अखिल भारतीय परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. उदित राज जी ने भारत के विकास में बाबा साहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर की योगदान की ओर ध्यान आकृष्ट कराते हुए कहां कि बाबा साहेब अम्बेडकर ने जाति विहिन सामाज का सपना देखा था और जाति विहीन समाज से ही भारत विकसित देश और महाशक्ति बन सकता है । उन्होंने लोगों से जाति विहिन समाज की स्थापना के लिए संकल्प लेने का आग्रह किया ।

डॉ. उदित राज ने कहा कि बाबा साहेब ने केवल दलितों आदिवासियों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों की ही लड़ाई नहीं लड़ रहे थे बाबा साहेब अम्बेडकर ने महिलाओं को समान अधिकार के लिए भी लड़ाई लड़ी थी और सन् 1951 में महिलाओं को सम्पति में पुरुष के समान हक दिलाने के लिए लाये गये बिल/विधेयक के गिर जाने से दुखी होकर कानून मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया था ।

डॉ. उदित राज ने कहा कि आज अगर संविधान में आरक्षण की व्यवस्था नहीं होती तो समाज से डॉक्टर, इंजीनियर, विधायक, सांसद इत्यादि बनना कठिन हो जाता । अन्होंने आरक्षण बचाने के लिए अनुसूचित जाति जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के बारे में विस्तृत रूप से चर्चा की और बताया कि सन् 1997 से कैसे संसद से संवैधानिक संशोधन कराकर उनके नेतृत्व में लड़ाई लड़कर वापिस कराया गया था और आज भी परिसंघ इस भूमिका को अग्रनीय रूप से निभा रहा है ।

डॉ. उदित राज जी ने गुरु तेग बहादुर अस्पताल में आयोजित इस सभा की सराहना करते हुए कहा कि पढ़े लिखे लोगों की इतनी बड़ी सभा पहले कभी नहीं हुई थी इसके लिए उन्होंने विशेष रूप से परिसंघ के राष्ट्रीय महासचिव श्री विनोद कुमार, डॉ. धनंजय कुमार और वीर सेन के प्रयास की सराहना की ।

इस अवसर पर परिसंघ के महा सचिव श्री विनोद कुमार ने संविदा कर्मचारी संघ के पदाधिकारियों को आश्वस्त किया कि लम्बे समय से कार्यरत चिकित्सक व पैरामेडिकल कर्मचारियों को शीघ्र नियमित कराने हेतू दिल्ली के माननीय उपराज्यपाल से समय लेकर इस समस्या के समाधान हेतू डॉ. उदित राज के साथ मिलकर प्रयास करेंगे ।

इस अवसर पर राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग भारत सरकार के माननीय सदस्य श्री राजू परमार जी ने बाबा साहेब के 'पेय बैक टू सोसायटी' के मूल मंत्र पर चलने की सलाह दी ।

उन्होंने दिल्ली के अस्पतालों और अन्य शिक्षण संस्थाओं में रिक्त पड़े पदों को जल्द से जल्द भरे जाने पर जोर दिया । श्री राजू परमार जी अस्पतालों में रोस्टर में व्याप्त अनियमितताओं पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उचित कार्यवाही का आश्वासन दिया । उन्होंने अस्पतालों और अन्य सरकारी कार्यालयों में आउटसोर्सिंग पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उस पर तत्काल रोक लगाने की सलाह दी ।

श्री राजू परमार जी ने परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष व सांसद डॉ. उदित राज जी की प्रशंसा करते हुए बाबा साहेब के सपनों को सच करने की आशा व्यक्त की । श्री परमार जी इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए प्लास्टिक सर्जरी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. धनंजय कुमार की प्रशंसा की और कार्यक्रम में आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद किया। समारोह में आमंत्रित पूर्व विधायक श्री वीर सिंह धिंगान जी ने परिसंघ के अध्यक्ष डॉ. उदित राज जी की प्रशंसा करते हुए कहां कि उन्होंने अपना पूरा समय समाज की लड़ाई लड़ने में लगाया है और आगे भी वे डॉ. उदित राज जी के साथ दलित समाज की लड़ाई लड़ने के लिए पार्टी लाइन से ऊपर उठकर साथ चलने को तैयार हैं । समारोह के मुख्य अतिथि को और विशिष्ठ अतिथि को बाबा साहेब अम्बेडकर जी की 123वीं जयंती समारोह के आयोजन का प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

अंत में यू.सी.एम.एस. के प्राचार्य डॉ. ओ.पी. कालरा ने समारोह में आये अतिथियों का धन्यवाद किया।

समारोह के मुख्य आयोजक डॉ. धनंजय कुमार, सहायक प्राध्यापक बर्न एवं प्लास्टीक सर्जरी विभाग गुरू तेग बहादुर अस्पताल, दिल्ली में समारोह में आये अनुसूचित जाति / जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. उदित राज जी और अन्य अतिथियों का विशेष रूप से आभार प्रकट करते हुए यू.सी.एम.एस. एवं गुरू तेग बहादुर अस्पताल ही नहीं अब पूरी दिल्ली के चिकित्सकों और कर्मचारियों की समस्याओं को उठाने और हक दिलाने का दृढ़ संकल्प लिया और अनुसूचित जाति जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के चिकित्सक एवं कर्मचारी सेल के गठन की बात कही।

डॉ. धनंजय कुमार ने अगले वर्ष भी पूरे उमंग के साथ बाबा साहेब की जयंती मनाने की बात कही।

...

Nepal's Dalits should turn to Ambedkar: Om Prakash Gahatraj

- Almost six decades ago, Ambedkar witnessed the deplorable condition of the Dalit settlements in Kathmandu and was angered by the government's apathy. In Nepal, even today, while Dalits fight for their rights, others don't seem to care

- The only way to eliminate caste-based discrimination and untouchability is to follow Dr Ambedkar's philosophy: "Educate, Agitate, Organize".

VIDYA BHUSHAN RAWAT

Om Prakash Gahatraj is an encyclopaedia of the Ambedkarite movement in Nepal. He was associated with the veteran leader Mohan Lal Kapali: When Babasaheb Ambedkar visited Kathmandu to attend the World Buddhist Conference in 1956, it was Kapali who took him to the Dalit settlements in the city. Gahatraj has written a biography of Kapali. He has worked in different capacities with the government of Nepal on issues related to Dalits and their upliftment. He is now engaged in the Dalit movement of Nepal. Gahatraj has been the chief editor of Pratinidhi, the literary Dalit quarterly magazine published in the 1980s, and has written many articles in leading newspapers, journals, etc. He spoke to Vidya Bhushan Rawat:

You mentioned yesterday about the visit of Dr Ambedkar in 1956. It is interesting to see how the Nepali Dalit community welcomed Babasaheb on his visit. Could you tell us a little more about this visit, – the people who hosted him and the places he visited. Did he have any advice for the people?

The government of Nepal and the Buddhist community hosted Dr Ambedkar. He visited Dalit areas, especially Deopatan (around the Pashupati temple), Sahagal (Lalitpur), Dhalku-Chettrapati (Kathmandu) and Bhaktapur. After witnessing the deplorable conditions they lived in, he advised them to engage in a large-scale struggle.

Where did he stay?

Since it was the government of Nepal and the Buddhist community who had invited Dr Ambedkar, he stayed in Sheetal Nivas, the government guest house, which has now been converted to the president's residence.

Babasaheb redefined Buddhism in India. He felt it was the only way out for the emancipation of the untouchables. Did Buddhism play the same emancipatory role in Nepal or have they culturally remained Hindus? Is there any movement to spread this message of Babasaheb in Nepal?

As far as I know no Buddhist has campaigned in Nepal to emancipate Dalits from this caste-based discrimination. Buddhists very rarely speak up for equality in their religious speeches. We, social workers, have created movements to spread Babasaheb's message in Nepal.

According to your book on Mohan Lal Kapali, Babasaheb also visited the Pashupatinath temple. Are you sure of it? Is there any photograph available? What was his reaction to this visit? Did he express his desire to visit the temple or was it the local community leaders who wanted him to go there?

The major area of Dalits is Deopatan, around the Pashupati temple. Formerly it was called Deopatan and now it is called Pashupati. Dr Ambedkar visited that area to see the condition of Dalits, not to worship at the Pasupati temple. On the way, he saw the Pashupati temple, that it was in the locality of the Dalits, but he did not worship. Even today there are thousands of Dalits living there. Neither the Dalit leaders wanted him to go there nor was this his desire; it just happened to be on the way to the Dalit settlement.

Babasaheb must have been deeply disturbed on seeing the condition of the Dalits in Nepal. What was his reaction?

Dr. Ambedkar was angered by the attitude of the Nepal government towards the Dalits.In Delhi, on his return, he said he felt betrayed by the leaders of Nepal. After returning from the visit to the settlements, the leader of the team of Dalit leaders, Saharsanath Kapali, the eldest brother of Mohan Lal Kapali, organised a tea reception in honour of Babasaheb at Sheetal Nivas. At the reception, Babasaheb called on the Dalits of Nepal to launch a struggle for their rights.

You mentioned that Babasaheb wanted to meet the prime minister, but when the prime minister came to know about Babasaheb's wish to meet him, he himself came to Sheetal Nivas. Could you describe that meeting to us? Did the prime minister give any particular assurance to Babasaheb?

I never mentioned that Babasaheb wanted to meet the prime minister. When Babasaheb visited the settlements and saw the condition of Dalits, he was visibly angry. A government officer who had accompanied him during the visit reported this to prime minister Tanka Prasad Acharya. After Babasaheb returned to the guest house (Sheetal Nivas), the prime minister invited Babasaheb to his residence to talk about this matter. When Babasaheb showed his reluctance to go to his residence, the prime minister himself came to Sheetal Nivas and assured Babasaheb that due attention will be given to improving the condition of the Dalits.

Tell us about the Ambedkarite movement in Nepal. What have been its achievements? Could you share with us the role of Mohan Lal Kapali in promoting Ambedkarism and strengthening the Dalit movement in Nepal.

The Nepali Ambedkarite movement is run by the Dalit leaders, not by non-Dalits. The late Mohan Lal Kapali led Nepal's Ambedkarite movement throughout his life. He told us about Babasaheb. Now most of the Dalit leaders in Nepal are convinced that Babasaheb's philosophy is only the way to get rid of caste-based discrimination.

What has been the role of Nepal's civil society in trying to eliminate discrimination against Dalits? Is there solidarity among various movements in Nepal for the cause of Dalit rights?

There is little role of the civil society in Nepal in efforts to eliminate discrimination against Dalits. There is solidarity among various movements fighting for Dalit rights. Most of the civil society organizations are led by Brahmins.

What is the status of Dalits in Nepal? Is there affirmative action (reservations) for the Dalits by the government?

There is no Dalit is in the council of ministers even today when the Dalit population according to government statistics is more than 13.2 per cent. There is only one chief district officer out of the 75. Out of 601 Constituent Assembly members, only 41 are members from the Dalit community. There is less than one percent Dalit recruitment in the civil service. There is very little affirmative action in the law and this again is poorly implemented because all the top leaders of major political parties are Brahmins. They do not like to lose the opportunities that their families enjoy today.

Nepal has outlawed untouchability but discrimination against Dalits and the practice of untouchability are prevalent. How does the government handle them? What is the role of the National Human Rights Commission and the National Dalit Commission in all this? Do they have power to summon and dismiss the officials who are found violating the law of the land?

The NHRC can only recommend the government to implement the laws. The National Dalit Commission is not a constitutional body, so it has no power. It can only request the agency concerned to provide justice. But the stakeholders so far have been turning a deaf ear. The government has assigned Dalits themselves, through the National Dalit Commission and Dalit Development Committee, to deal with this problem. Non-Dalits are not interested in this job.

How strong is the role of the leftist organisations or parties in strengthening the Dalit movement in Nepal? How do Ambedkarite organizations, if there are any, see them? What do you think has been the role of the Maoists in fighting for the rights of the Dalits in your country?

All of them are using Dalits for their own ends, and they throw the issue of Dalits into the garbage bin after use. This is the reality. Most of the leaders of the leftist parties are also Brahmins, so it is easy to understand why this is so.

Are political parties ready to give fair representation to Dalits in their structure or do they still want to continue with their patronizing attitude?

They give very little representation to Dalits and none at the decision-making level. They just want to show the donors that they are inclusive.

How do you then eliminate caste discrimination and untouchability?

The only way to eliminate caste-based discrimination and untouchability is to follow Dr Ambedkar's philosophy: "Educate, Agitate, Organize".

- Courtesy : Forward Press

VOICE OF BUDDHA

Publisher : Dr. UDIT RAJ (RAM RAJ), Chairman - Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42

● Year : 17 ● Issue 15 ● Fortnightly ● Bi-lingual ● 16 to 30 June, 2014

Narendra Modi bows on Parliament steps before entering

It was BJP Prime Minister Narendra Modi's first visit to Parliament's Central Hall in Parliament and he marked the occasion by bowing on the steps of the entrance to the building before entering. After alighting from the car, Modi bent his forehead and touched the steps before entering the building for the meeting of his party's parliamentary party, where he was elected its leader.

He is the first Prime Minister who said loudly that the Parliament is the temple of the democracy. This sent the message to the citizen of the country that the real welfare flows through Parliament. The world knows that Narender Modi comes from very humble background and it was the strength of democracy which facilitated him to grab the top post in the country. This inspires each of us and thus anybody can rise provided he has commitment and mission. Our leaders and workers should put up such efforts and at least try in that direction, they will reach somewhere and if not at that height.

...

Don't sit Ideal

The UPA government is decimated with huge margin and one of the reasons was to ignore the demands of All India Confederation of SC/ST Organizations. We have high hope from this government and why not? This time SC/ST have voted BJP in large number and the party has come into power. Ours is the only movement which has direction and addresses the specific needs as per time and space. Many other organizations are preaching the ideology without accountability. After sometime each organization's work should be evaluated and audited. The confederation is fully accountable and we ask openly that if it fails to deliver the result, the society should not cooperate.

It was collective decision of Confederation to ask me to join Bhartiya Janata Party just to reach to the Parliament and which had happened also. It does not mean that the Confederation leaders and workers sit ideal rather they should gear up fast. Unless until there is strong social movement, there are thinner chances to get our rights. Agitation will keep check on both sides ruling and opposition. I need weight behind and that will be appreciated in BJP. I can say them that behind me there are huge number of Dalits to support the government if actions in favour are done.

- Dr. Udit Raj

Appeal to the Readers

You will be happy to know that the **Voice of Buddha** will now be published both in Hindi and English so that readers who cannot read in Hindi can make use of the English edition. I appeal to the readers to send their contribution through Bank draft in favour of **'Justice Publications'** at T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001. The contribution amount can also be transferred in 'Justice Publications' Punjab National Bank account no. 0636000102165381 branch Janpath, New Delhi, under intimation to us by email or telephone or by letter. Sometimes, it might happen that you don't receive the Voice of Buddha. In that case kindly write to us and also check up with the post office. As we are facing financial crisis to run it, you all are requested to send the contribution regularly.

Contribution:
Five years : Rs. 600/-
One year : Rs. 150/-

EDUCATE! ORGANISE!! AGITATE!!!

NSOSYF

NATIONAL SC, ST, OBC STUDENT & YOUTH FRONT

चार दिवसीय

राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

17 जुलाई से 20 जुलाई, 2014

स्थान : डॉ0 अम्बेडकर भवन, रानी झांसी रोड,
वीडियोकॉन टॉवर, झंडेवालान, नई दिल्ली

डी. हर्षवर्धन (राष्ट्रीय समन्वयक) 07709975562

रवि प्रकाश (उत्तर भारत समन्वयक) 08881677448

साबरी व्ही (दक्षिण समन्वयक) 08881677448

T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 011-23354841-42, Telefax: 011-23354843
E-mail : h.dawane2013@gmail.com/ Facebook.com/harshavrdhandawane

Publisher, Printer and Editor - Dr. UDIT RAJ (FORMERLY KNOWN AS RAM RAJ), on behalf of Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42, Telefax:23354843, Printed at Sanjay Printing Works, WZ-4A, Basai Road, New Delhi.
Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com Computer typesetting by N. K. Karn